कथावाचक एवं कवियों का बढ़ता व्यापार

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

'' होइहें वहीं जो राम रचि राखा '' भारत देश में आज भी धर्म - अध्यात्म और संस्कार और सभ्यता का वर्चस्व कायम है तथा राष्ट्र की बात आने पर हर समुदाय के लोग तिरंगे के स्वाभिमान के लिए सीना तानकर खड़े हो जाते हैं। पजा - पाठ, भक्ति - भाव, ज्ञान की बातों सहित साहित्य को गंभीरता से हर भारतीय लेता है चाहे वह किसी भी धर्म या समुदाय का हो। इस भाव को देखते हुए देश के भीतर एवं बाहर विभिन्न प्रकार के कथाओं एवं वर्त्तमान समय की राजनीति एवं राष्ट्रभक्ति को लेकर कवि सम्मेलनों का बड़ा बाजार बनता जा रहा है जो पूर्णतः व्यापार का रूप ले रहा है। इस बढ़ते बाजार एवं व्यापार को करने के लिए तथा इसको बढ़ावा देने के लिए कथावाचक एवं कवियों के साथ आयोजक मंडल देश की जनता की भावना का भरपूर ख्याल रखते हुए अपनी झोली भी भरने में कामयाब है और सबसे अधिक कमाई का क्षेत्र होने के बाद भी सरकार के खाते में कुछ खास नहीं जाता और जनता भी इनसे हिसाब मांगने में डरती है। हिन्दू कथावाचक और मुस्लिम मौलाना अपने - अपने धर्म की कहानी को अपने लोगों के बीच अपनी बात को इस लहजे में रख रहे हैं जिससे आपसी भाईचारा भी खंडित हो रहा है और उससे भी बड़ी समस्या तो यह है की दोनों धर्म के जानकार एक ही कहानी को तोड़ - मड़ोड कर बता रहे हैं वैसे में अपना पैसा लगाकर सही जानकारी पाने से भी वंचित हो जाये तो फिर क्या होगा। सनातन का देश में अपने ही धर्म के साथ खिलवाड़ के कारण युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित होती है।

कथा सुनने एवं सुनाने का भारत में अवलौकिक इतिहास है और यह सिलसिला कथावाचकों ने नहीं प्रारंभ किया बल्कि सृष्टि की रचना करने वाले भगवान ने इस प्रथा को शुरू किया तथा इसके कई प्रकार के वेद एवं ग्रंथ को लिखा। 02 महीने सावन का महीना चला और भगवान रूद्ध (शिव) की कहानी को सबने सोसल मीडिया पर, समाचार पत्र-पत्रिका में पढ़ा तथा टेलीविजन पर भी देखा और शिव-पार्वती की कहानी को समझा। आज भारत देश में सनातन संस्कृति के वाहक आदि शंकराचार्य के वाणी से अधिक उन कथावाचकों के कथा-कहानी पर भरोसा अधिक होने लगा है जो आज के आधुनिक साज-बाज के साथ संगीत के धुन पर कथा सुनाने का करोड़ों रूपये लेते हैं। शंकराचार्य निच्छलानंद सरस्वती जी के पास नासा और आईआई एम के वरीष्ठ लोग उनके पास आकर गुत्थी सुलझाते हैं लेकिन कथावाचक की कहानी से देश कई बार शर्मसार भी हुआ क्योंकि कथा के आड़ में कई बाबा बलात्कार एवं अत्याचार के कृत्य में जेल की सलाखों में अपनी कहानी लिख रहे हैं। ऐसा भी नहीं है कि भारत की पौराणिक संस्कृति को सहेजने वाले कथावाचक नहीं है बल्कि दर्जनों ऐसे कथावाचक भारत देश की एकता - अखंडता एवं राष्ट्रीय भावना के साथ सनातन की सच्चाई को देश-दुनिया के बीच प्रमाणिक तथ्यों के साथ रख रहे हैं। हजारों वर्ष की गुलामी की जंजीर में बंधा भारत की गौरव-गाथा को राजनीतिक लाभ लेने के लिए आजादी के बाद और आजादी के पूर्व अपना साम्राज्य कायम रखने के लिए दोगली कहानी को आवाम के बीच रखा जाता रहा है लेकिन वर्त्तमान समय में कथावाचक एवं कवियों ने अपनी जीविका के लिए इसको व्यापार के रूप में जहां खड़ा किया वहीं भूत - वर्त्तमान की सच्चाई को जनता के बीच तथ्यों के साथ ला रहे हैं और इस प्रयास को सफल बनाने के लिए कथा एवं कवि सम्मेलन से बड़ा व्यापार का रूप आयोजक मंडल देने में कामयाब है। आज इस देश में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सांसद, विधायक सहित देश के सर्वोच्च परीक्षा पास कर पदाधिकारी बने अधिकारियों से अधिक पारिश्रमिक कथावाचकों एवं कवियों का है। एक तरफ धर्म का प्रचार -प्रसार की बात होती है तथा राष्ट्रीय भावना को जागृत किया जाता है लेकिन इस कार्य के लिए आयोजक (मुख्य यजमान) को उनको मोटी रकम चुकानी पड़ती है। साफतौर पर यह कहा जा सकता है कि कथावाचक एवं कवि भी धर्म एवं साहित्य का व्यापार कर रहे हैं और जब व्यापार होगा तो इनको भी सरकारी खाता में टैक्स देना चाहिए लेकिन 18 प्रतिशत जीएसटी बचाने के लिए लोग खाता में पैसा कम और नगद ज्यादा लेते हैं की सैकड़ों कहानी सामने आ चुकी है जब कथावाचक एवं कवियों का पैसा आयोजकों ने नहीं दिया। आज के भौतिकवादी युग में पैसा के चकाचौंध में लोग जहां परेशान है और पाप से मुक्ति चाहते है तो दूसरी तरफ तनाव (स्ट्रेस) को कम करने के लिए धर्म एवं भगवान के शरण में जाकर बचना चाहते हैं और महत्वपूर्ण कारण है आज भारत देश के अलावा विदेशों में कथावाचकों एवं कवियों का बुकिंग जोरो पर है तो कई इवेंट वाले भी इस क्षेत्र को सर्वाधिक लाभ वाला व्यापार मानते हैं अगर कथावाचक एवं कवि काफी लोकप्रिय हों। कथावाचक के साथ-साथ इन दिनों मौलाना भी अपने कुरान को अपने समुदाय के बीच उसके अच्छे एवं बुरे दोनों पक्षों को रखते हैं और तो और कई मौलाना सनातन संस्कृति को स्वीकार भी करते हैं। भारत पूरे विश्व में धर्म सर्वोच्च है को मानता है और यही कारण है कि भारत देश में ही कई धर्म एवं पथ बड़ी तेजी से पनप रहे हैं और अपने सुविधानुसार आवाम के भावना का कारोबार कर रहे है। जिस प्रकार देश के भीतर धर्म का प्रचार का बाजार हो रहा है उससे भारत के भीतर कई प्रकार का माहौल बन रहा है क्योंकि अपनी दुकान को सबसे बड़ा दुकान बनाने के चक्कर में एक ही कथा को कई प्रकार से कहकर लोगों को भ्रमित भी किया जा रहा है। फिल्मी कलाकार जिस प्रकार अपना कलाकारी का किमत जनता से वसूल रहे हैं कुछ वैसा ही खेल धर्म के ठेकेदार भी खेल रहे हैं। फिल्मी कलाकार हो या कथावाचक एवं कवि जो अपना कला का कारोबार कर रहा हो उसको भारत रत्न या कोई भी राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित नहीं करना चाहिए क्योंकि उन्होंने अपनी किमत पहले ही वसूल ली है। जो राष्ट्रहित में, समाजहित में और मानव कल्याण के लिए धर्म का प्रचार कर रहे हैं उनको तमाम सम्मान एवं सुविधाए मिलनी चाहिए न कि राजनीति के क्षणिक लाभ के लिए उनको भगवान का दर्जा दे देना चाहिए। कांग्रेस हो या भाजपा जेल में बंद कई कथावाचको को पैर छूकर प्रणाम करते थे जिन्होंने धर्म एवं आस्था के साथ खिलवाड़ किया और बड़ा कारोबार किया। कई कथावाचक एवं कवि है जिनके पास अकूत संपत्ति है क्योंकि प्रतिदिन की कमाई देश के बड़ी-बड़ी कंपनियों से कम नहीं है। बहुत तेजी से कथावाचकों एवं कवियों का व्यापार बढ़ता जा रहा है। व्यापार इस तीव्र गति से बढ़ता रहा था इनका भी शेयर, शेयर बाजार में आ जायेगा। हो सकता है कि इनका व्यापार किसी बड़ी-बड़ी कंपनी के साथ हो जिसका उद्बोधन भविष्य में हो। वहीं जनता धर्म के भ्रम में मशगूल है।